मध्य गंगा क्षेत्र में कृषि आरम्भ

सिद्धेश्वर प्रसाद शुक्ला*

शोधसार

भारत में मानव सभ्यता के विकास में गंगा घाटी का विशिष्ट स्थान है। प्राचीन काल से, यह अपने व्यापक नदी बेसिन के साथ विविध संस्कृतियों, प्रगति और गिरावट की वर्णित पृष्ठभूमि रही है। जब मनुष्यों ने पहली बार विंध्य की पहाड़ी बाधाओं से निकलकर गंगा के मैदानी इलाकों में कदम रखा, तो संभावना है कि उन्हें ऊबड़-खाबड़ आदिवासी समाजों से एक आरामदायक आश्रय मिला, और अंततः उन्होंने गंगा के विशाल समतल क्षेत्रें में अपना स्थायी निवास स्थापित किया। गंगा के मैदानी इलाकों में मनुष्यों के लिए विश्राम की अवधि मध्यपाषाण युग से मेल खाती है। इस दौरान विंध्य क्षेत्र की शुष्क जलवायु के कारण खाद्य संसाधनों की तलाश में मानव गंगा-यमुना नदियों को पार कर उपजाऊ मैदानों में बस गये। यद्यपि मनुष्यों के लिए यह विश्राम स्थल प्यास और कठोर मौसम की स्थिति से रहित था, इस क्षेत्र की अनूठी विशेषताओं ने इसे इतना प्रभावशाली बना दिया कि मनुष्यों को बार-बार वापस खींचा जाता था, चाहे विंध्य क्षेत्र में उपयुक्त पत्थर संसाधनों के लिए या चट्टानी इलाकों या शुष्क इलाकों के आकर्षण से बचने के लिए साइटें इन आवश्यक चीज़ों की खोज में, मनुष्यों ने अंततः विशाल गंगा के मैदानों में अपना स्थायी निवास स्थापित किया। पर्यावरणीय उपयुक्तता के दृष्टिकोण से, मानव बस्तियों के साक्ष्य और सांस्कृतिक प्रथाओं की निरंतरता के आधार पर, मध्य गंगा मैदान को सबसे उपयुक्त माना जाता है। चाहे वह स्थायी बंदोबस्त का पहला प्रयास हो या शहरीकरण का विकास, इस क्षेत्र में मानव सभ्यता के विकास की कहानी विभिन्न दृष्टिकोणों से स्पष्ट है। इस क्षेत्र का महत्व इस तथ्य से और अधिक रेखांकित होता है कि, स्वतंत्रता से पहले और बाद में, पुरातत्वविदों ने इस क्षेत्र में कई स्थलों का बड़े पैमाने पर सर्वेक्षण और उत्खनन किया है, जिससे मानव सभ्यता के अनसुलझे प्रश्नों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान की गई है। किसी विशिष्ट विषय को शोध विषय बनाने में मेरा मूल विचार मध्य गंगा घाटी में मानव सभ्यता के विकास की कहानी को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करना है। शोधपत्र के माध्यम से मेरा प्रयास मध्य गंगा घाटी में मानव सभ्यता की उत्पत्ति और विकास की कहानी को सुव्यवस्थित क्रम में प्रस्तुत करना है।

मध्य गंगा मैदान का भौगोलिक परिदृश्य, जलवायु, वनस्पति और जीव, जल स्रोत और सांस्कृतिक अनुक्रम

गंगा नदी न केवल भारत की शानदार सांस्कृतिक विरासत के रूप में खड़ी है, बल्कि सदियों से भारतीय मानस के लिए प्रेरणा का एक शाश्वत स्रोत भी रही है। अपने बेसिन में महान सभ्यताओं के उतार-चढ़ाव और मानव प्रगति और पतन की कहानी को समाहित करने वाली इस पवित्र नदी के महत्व का वर्णन न केवल

एसोसिएट प्रोफेसर, राजधानी महाविद्यालय, राजा गार्डेन, महात्मा गाँधी मार्ग नई दिल्ली -110015

*इस परियोजना कार्य में चार साथियों द्वारा सहायता किया गया। सभी के द्वारा किये गये कार्य, अमित (शोधकर्ता-1753), राजमन (शोधकर्ता-1740),कुमारी अंजली (मुख्य चित्र-1710), शिवम नागर (शोधकर्ता-1760)